DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR
Dist.Nanded

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

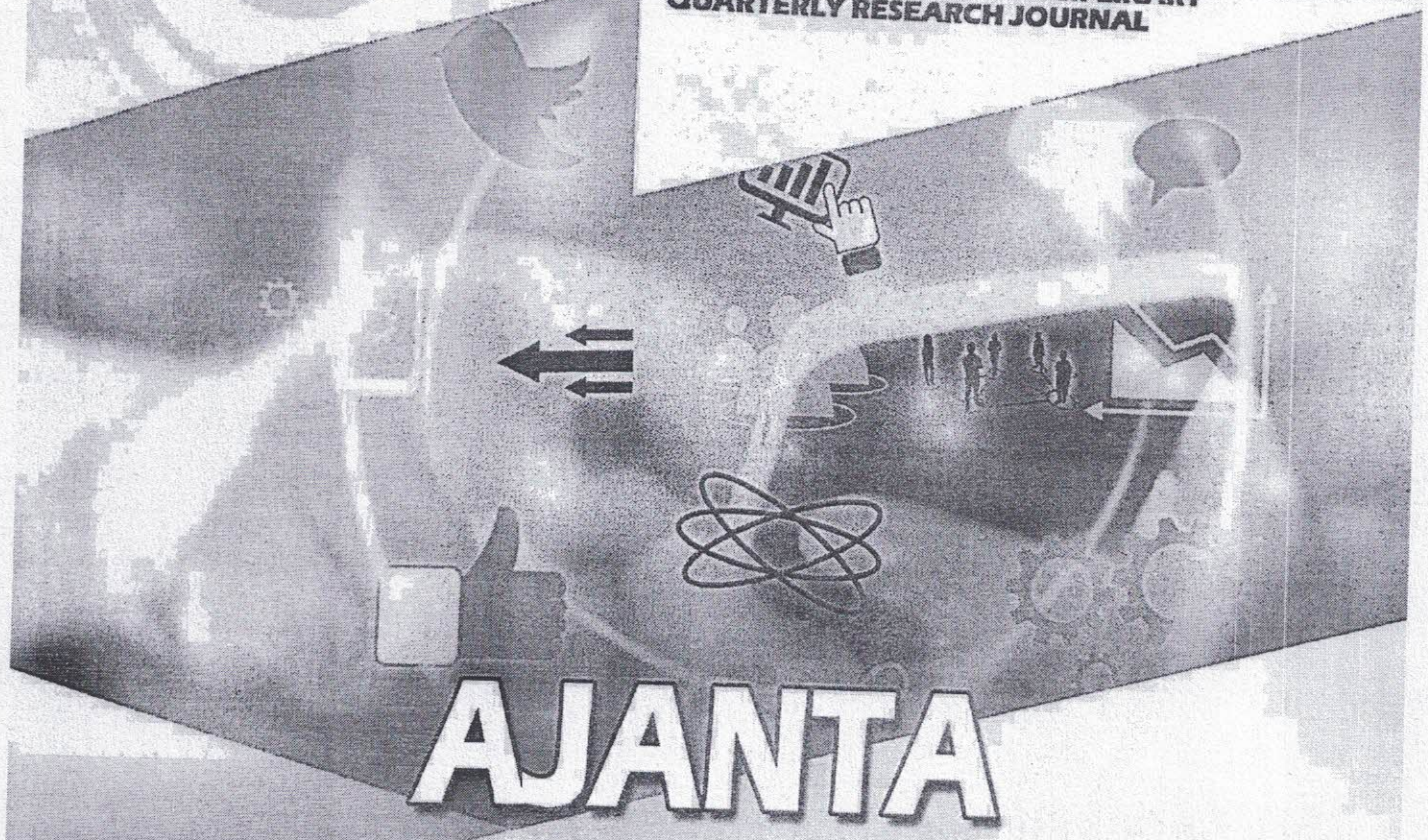

Volume-VIII, Issue-II
April - June - 2019
Hindi Part - II / III

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

IMPACT FACTOR /
INDEXING 2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

Scanned by CamScanner

CONTENTS OF HINDI PART - III

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१४	द्वैताद्वैतयो: ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्यात्वविचार: **हरिश्चन्द्र वर्मन**	७०-७८
१५	रामायण में प्रतिपादित आयुर्वेदिक तत्त्व **डॉ. सूर्यभूषण दुबे**	७९-८३
१६	बृहदारण्यक उपनिषद् का दार्शनिक परिप्रेक्ष्य **डॉ. मञ्जरी**	८४-८८
१७	व्यंग्यकार रवीन्द्रनाथ त्यागी **प्रा. डॉ. प्रतिभा रंगनाथराव थारासूरकर (पिलखाने)**	८९-९२
18	Religious Meanings in the Poetry of Al Baroudi **Mubassir ur Rahman**	93-97
19	Sheruz Zuhdi Dawatun Ilal Qiyam Al Akhlaqia **Mohammed Mujeeb Mohammed Shakeel**	98-102
२०	'मैला आँचल' मे राजनीतिक यथार्थ **डॉ. कांचनमाला बाहेती (रांदड)**	१०३-१०५
२१	नरेंद्र कोहली के व्यंग्य साहित्य में सामाजिक व्यंग्य **प्रा. डॉ. पुष्पलता अग्रवाल** **प्रा. खंदकुरे व्यंकट अमृतराव**	१०६-१११

Scanned by CamScanner

VOLUME – VIII, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

२१. नरेंद्र कोहली के व्यंग्य साहित्य में सामाजिक व्यंग्य

प्रा. डॉ. पुष्पलता अग्रवाल
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर ।
प्रा. खंदकुरे व्यंकट अमृतराव
सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, देगलूर महाविद्यालय, देगलूर ।

प्रस्तावना

साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है। यह दर्पण समाज की सही तस्वीर लोगों के सामने लाता है। साहित्य इस काम के लिए समाज से ही प्रेरणा लेता है। क्योंकि यही समाज का स्वरुप भ्रष्ट होता है तो सामान्य रुप से जनता सरकार पर दोष लगाती है। आदमी की मानसिकता में परिवर्तन आ गया है। उनमे मानवीय मूल्यों की जगह व्यावसायिकता की भावना आ गई है। मानवीय संबंधो की आत्मीयमता में दरार बढती जा रही है। मानवीय उदाता भावना का ऱ्हास होकर, उनकी जगह पर संकीर्णता, संकुचितता , तंगदिली का माहौल बन गया है।

आधुनिक युग का मनुष्य स्वार्थपरता की इस दौड में बहुत बुरी तरह से फँसता जा रहा है। नैतिक मूल्यों को भूलता जा रहा है। अपने लिए सोचना, अपने लिए काम करना ही आजकल की दुनिया की खासियत हो गई है। सामाजिक संबंध तो दूर पारिवारिक संबंध में भी स्वार्थ भावनाओं को अपना रहा है। अपने स्वार्थ के लिए मनुष्य कौनसे भी हदतक जाने के लिए तैयार हो गया है। पति-पत्नी, माँ-बाप, भाई-बहन आदि कई पारिवारिक संबंध एक समझौता बनकर रह गया है। ओर एक महज आर्थिक समझौता बन गया है।

तटस्थता और निष्क्रियता इस स्वार्थ का अगला रुप है। यह हमारा सबसे बडा संकट ही नही बल्कि सबसे वडी कमजोरी भी है। सार्वजनिक संपत्ती पर सब लागे अपना अधिकार जमाने के लिए हाजिर हो जाते है, लेकिन सार्वजनिक संपत्ती का दायित्व लेने के लिए कोई भी सामने नहीं आता है। इसी मानसिकता के कारण हमारा समाज बुरी तरह से बिगड रहा है। क्लब, डिनर, बफे आदि ये विदेशी सभ्यता आ गई है। आज हमारे समाज का सामाजिक ढाँचा बुरी तरह से बिगड रहा है।

इन सभी परिस्थितियों में एक व्यंग्यकार ही समाज, सरकार तथा लोगों के दोषो पर प्रकाश डालता है और उनकी मानसिकता में परिवर्तन लाने के लिए प्रभावकारी ढंग से काम करता है। नरेन्द्र कोहली ने आज के आधुनिक समाज में व्याप्त आडंबर, दिखावा, देहेज प्रथा, भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता, रिश्वतखोरी, कालाबाजारी जैसी कई सामाजिक समस्याँ पर व्यंग्य किया है। इस सारी विसंगतियों पर नरेन्द्र कोहली ने अपनी व्यंग्य रचनाएँ लिखी है। उनका व्यंग्य कभी हथियार धारण करता है, तो कभी करुणा का स्त्रोत बनता है। नरेन्द्र कोहली ने अपने तीखे व्यंग्य प्रहार के माध्यम से, दूषित समाज में सुधारलाने वाले व्यंग्यकार की तरह यह जिम्मेदारी सफलतापूर्वक निभाई है।

Scanned by CamScanner

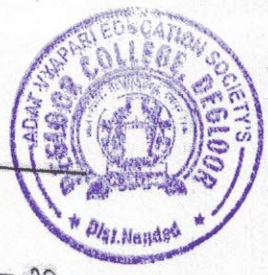

पति-पत्नी का संबंध

आज का समाज अमानवीय बनता जा रहा है। सामान्य परिवार के लोग इस अमानवीय संस्कृति से सबसे ज्यादा पीडित है। नरेन्द्र कोहलीने अपने व्यंग्य साहित्य में सामान्य व्यक्ति की इस पीडा को चित्रित किया है। आज आम आदमी इस सामाजिक व्यवस्था के जकडन से छुटने के लिए छटपटाहट और संघर्ष कर रहा है। उसे कोहलीजीने अभिव्यक्त किया है। पति अपनी पत्नी रुठ जाने पर उसे किसी बहाने मनाने की कोशिश करता है, लेकिन पत्नी इसे धिक्कारते हुऐ उसे अपने से दूर करने का निर्णय लेती है। मध्यमवर्गीय परिवार में पति-पत्नी के बीच के झगडे कितने अजीब होते है, उसकी वजह से घर का माहौल मे अशांति आ जाती है। ऐसी घटनाओं का उल्लेख नरेन्द्र कोहलीने 'शेखचिल्ली' नामक व्यंग्य रचना में रोचक ढंग से किया है। ''हमारा तो इतिहास ही आज से आरंभ हुआ है। पत्नी बोली प्रेम भी होगा तो आज से ही होगा और तुम्हारे जैसे गलीज आदमी से कौन स्त्री प्रेम करेगी। आज जाओं यहाँ से। सहसा वह रुकी, पिछला सब कुछ भुला दिया। आपने बाप का नाम भी भूल गए होंगे। वह भी इतिहास ही है। अपने बाप के नाम के स्थान पर किसका नाम लिखाओगे?

शेखचिल्ली समझ नहीं पाया कि उसकी पत्नी उसको गाली दे रही है। बोला, सोचता हू पार्टी के किसी नेता को अपना बाप मान लूँ। उससे राजनीतिक लाभ भी होगा।''

अविश्वास का माहौल

इस आधुनिक समाज में लोग एक दूसरे पर विश्वास न करने की स्थिति के आखिरी मुकाम तक पहुँच चुके है। अविश्वास के इस माहौल में समाज में जनता किसी पर भी भरोसा नहीं करती है, चाहे वह किसी भी उन्नत स्थान पर बैठा हो।

आधुनिक समाज की परिवर्तनशील मनःस्थिति का चित्रण नरेन्द्र कोहलीने अपने 'प्रेम का देवता', 'मैं और एक वरदान' नामक व्यंग्य रचनाओं इस प्रकार व्यंग्य किया है। ''मैं दो से अधिक वरदान न दे सकूँगा। अब तुम चाहे मेरी तुलना भारत ही नहीं उससे भी घटिया पाकिस्तान की सरकार से कर लो। आखिर हमारा वरदानों का भी सीमित कोटा ही होता है।''

''देखो देवता, मैं बोला अपने कोटे की बात करके तुम मुझे टाल नहीं सकते। मैं जानता हूँ, तुम यहाँ से वरदान बचाकर ले जाओगे और फिर उन बचे वरदानों को ब्लैक में बेच दोगे। मैं तुम्हारी सारी चाला की समझता हूँ।''

दहेज की समस्या

शादी दो आत्माओं का मिलन होता है। यह शादी दो आत्माओं को मिलाता नहीं, बल्कि दो परिवारिको मिलाता है और संस्कारों का मिलन होता है। आज के युग में दहेज के रुप में पैसा कमाने का एक धंधा बन गया है। लडकेवाले दहेज की माँग करते समय शर्माते नहीं है। जैसे मंदिरों में दान की मांग पुजारी करता है। वेसे ही लडकेवाले अपने बेटे के लिए दान माँगते है। जिस प्रकार बाजार में पदार्थों का भाव निर्धारित किया जाता है, उसी तरह शादी के बाजार में भी लडको का मूल्य तय किया जाता है। इस पर नरेन्द्र कोहलीने परेशानियाँ नामक रचना में तीखा व्यंग्य किया है।-

Scanned by CamScanner

''बेटे का विवाह क्या मकान खाली करने जैसा है? मैने भरसक उसे दुपटा। उपर से तो नहीं लगता, पर बात वही है। वह पूर्ण आत्मविश्वास के साथ बोला, सास, बहू के पक्ष में बेटे पर से अपना कब्जा हटाती है था नहीं? बहू बेटे का कब्जा लेती है या नहीं?

तुम दुकान हो या मकान?

मैं गौदाम हूँ, वह हँसा, ताला लगा गोदाम । किसी का भी पता नहीं है कि गोदाम में क्या भरा है। सास भी ब्लाइंड ही खेलती है और बहू भी...।''

सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से संपन्न भारतीय समाज आज एक विचित्र परिस्थिति से गुजर रहा है। आधुनिकता समाज की पुरानी मान्यताओं को छोडने को विवश कर रही है, उसी वक्त परंपरागत संस्कार उसे जकडे हुए है। तथाकथित सुशिक्षित समाज में दहेज का भूत सवार होना यह अपने समाज का कलंक है और खोखली आधुनिकता का सबूत है। इस आधुनिक समाज में पैसे के लिए अपने आप को बाजार में बेचने के लिए लडके वाले लालालियत रहते है। ऐसे लोगों की हीन मानसिकता की खिल्ली उडाते हुए नरेन्द्र कोहली ने 'त्रासदियाँ खाली हाथ' की निबंध में लिखते है।-

''एक अन्य मित्र है हमारे, जिनकी दृष्टि दूसरों के खाली हाथों पर नहीं, अपने हाथों पर है। उनकी जेब में भारी वेतन वाला पर्स है, घर से भी संपन्न है, और फिर अभी कुँवारे है। प्रतिदिन दो-चार रिश्ते प्रस्तावित होते रहते है। कुँवारी कन्याओं के अभिवावक उन्हे चाप और खाने पर बुलाते ही रहते है। हमें उनकी दर्सो उँगलियाँ घी में दिखाई पडती है और वे अपने हाथ झटक-झटक कर अपने खाली हाथों को रोते है।''

विदेशी संस्कृति का प्रभाव

हिन्दुस्तान की जनता अंग्रेजी से बहुत ही प्रभावित है। विदेशी भाषामें बात करने वाले को समाज में श्रेष्ठ मानने की प्रवृत्ति बढती जा रही है। विदेशी शराब पीना, विदेशी डाँस करना, काँटे चम्मच से खाने की प्रक्रिया को अंग्रेजीयत का प्रतीक मानते है। अंग्रेजी बोलने को अपने लिए शान की बात समझते है। मानसिक दासता की मनोभावों पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए नरेन्द्र कोहलीने 'टाई' नामक रचना में व्यंग्य का वार किया है।

''गधे हो तुम। रामलुभाया ने कहा, ऐसा व्यक्ति रामनवमी के दिन अपने घर में न तो केक काटकर हैप्पी बर्थ डे टू यू, श्रीराम गाएगा और नही मेरी क्रिसमस और हैप्पी न्यू इअर के कार्ड भेजेगा, और नही ३१ दिसंबर की रात को शराब पी कर दंगा करेगा।''

आधुनिक समाज में विदेशी संस्कृति के प्रति लोग आकर्षित हो रहे है। आँखे मूँदकर सोचे-समझे बिना विदेशी संस्कृति का अनुसरण करते चले जा रहे है। इस परिस्थिति का फायदा पंडित लोग कैसे उठाते है इस पर व्यंगय करते हुए नरेन्द्र कोहली ने 'संस्कृति से बिछुडने का रोग' में व्यंग्य करते है। ''मैं इसे जड से उखाड दूँगा। मने संगीतमयी गोलियाँ बनाई है। एक गोली

Scanned by CamScanner

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR

खालो, आत्मा तृप्त होकर सो जाती है। मैने कालिदास के नाटकों का भस्म बनाया है, कथकली का चूर्ण बनाया है। कोई चीज़ नहीं छोडी। संस्कृति का प्रत्येक तत्त्व मैने अपनी औषधियों में प्रस्तुत कर दिया है। अब कोई भी राष्ट्रीय आत्मा भूखी रहकर रात भर नहीं जाएगी। रोनेवाली आत्माएँ मेरी औषधियाँ खाकर संस्कृति से भरपूर होकर सो जाती है।''

मूर्खता

आजकल समाज में ज्यादातर लोग अर्थ को अनर्थ समझने में बहुत ही माहिर है । आजकल इस समाज के व्यवसाय के क्षेत्र में विनियमय का दौर बहुत जोरों पर चल रहा है। अगर अपनी बुढी माँ के बदले विनिमय में एक सुंदरी माँ तो लोग उसे स्वीकार करने के लिए भी तैयार होते है। 'इस्त्री' को 'स्त्री' समझकर रामलुभाया का साथी क्या करता है इस पर व्यंग्य करते हुए नरेन्द्र कोहलीने अपने 'विनेमय' नामक लेख में लिखा है।-

''मेरी बुढिया के बदले में यह सुंदरी दे दोगे?

उसने पूछा ,

तेरा दिमाग तो ठीक है बुड्ढे।

दुकानदार ने उसे डाँटा।

तुमने विज्ञापन तो यही दिया था।''

''रामलुभाया ने भोलेपन से कहा। हमने इस्त्री के विनिमय का विज्ञान दिया था, स्त्री के विनिमय का नहीं। उसने क्रुध्द स्वर में कहा।''

''जो स्कूल को इस्कूल और स्कूटर का इस्कूटर कहते है, तुम उनको अपनी पुरानी इस्त्री देकर नई स्त्री ले आओ। फिलिप वाले तो इस्त्री को इस्त्री और स्त्री को स्त्री ही कहते है। विक्रेता ने बताया।''

झूठी प्रतिष्ठा

आधुनिक युग में भारतीय लोग धीरे-धीरे विदेशी कंपनियों से प्रभावित हो रहे है। ये कंपनियाँ वस्तुएँ तैयार करके बाजार में बेचती है, लोग आँखे मूँदकर उनका स्वागत करते है। इनका इस्तेमाल करना अब प्रतिष्ठा का विषय बन गया है। इन्ही विदेशी कंपनियों के वजह से हमारी देशी-कंपनियाँ का धंधा चौपट हो रहा है। फिर भी लोग चिनी वस्तुओं का अनुकरण कर रहे है। लोगों की इस झूठी प्रतिष्ठा पर व्यंग्य करते हुए नरेन्द्र कोहलीने 'दिन का शुभारंभ' नामक व्यंग्य रचना में लिखते है।

''तो तुम्हारा नाश्ता तुम्हारी पत्नी नहीं बनाती ? कोई कंपनी बनाती है?

पहले कंपानी बनाती है फिी मेरी पत्नी बनाती है।''

समाज में अब सीधे-सादे लोगों का कोई महत्त्व नहीं रह गया है। हर आदमी बहुत आसान मार्ग चुनना पसंद करेगा, क्योंकि इसमें कुछ परिश्रम करने की जरुरत नहीं होती है। परिश्रम किए बिना इस वाममार्ग से पैसा कमा सकते है, अतः आमतौर

Scanned by CamScanner

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

से हर कोई इन्ही लोगों के साथ दोस्ती निभाना चाहते है। इस पर नरेन्द्र कोहलीने 'विषधर' में अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते है।

''कोई भला आदमी तो कभी तुम्हारे निकट आता नहीं। हर समय तुम्हे गुंडे- बदमाश ही घेरे रहते है। इतने हो कर्तव्यपरायणता होते तो हर समय तुम्हारे साथ गुंडे- बदमाश ही घेरे ही क्यों रहते है। उनके साथ तुम्हारा उठना-बैठना क्यो? ''

हमारे लोगों की सोचने की धारणा बदलती जा रही है। सामाजिक वातावरण तेजी से बदल रहा है। हम बदलाव को मानने के लिए तैयार नहीं है। जिस सुविधा या साधन से हम वंचित रह जाते है या जिसे हम पा नहीं सकते है। उसे हम मन में ही 'अंगूरखट्टे' वाली भावना रखते है।

दूषित मानसिकता

समाज के हर वर्ग में भयंकर भ्रष्टाचार व्याप्त है। हर क्षेत्र के लोग इसकी चपेट में आ गए है। समाज में भ्रष्ट व्यक्तियों का महत्त्व बढता जा रहा है और इन्ही लोगों का अनुसरण समाज कर रहा है। थाने में पुलिस प्रभारी अधिकारी सिर्फ शरीफ लोगों के साथ रहना नही चाहता बल्कि फायदा लानेवाले लोगों से मेल रखना चाहता है। पुलिस की इस प्रकार दूषित मानसिकता पर रामलुभाया के माध्यम से नरेन्द्र कोहली ने 'शर्म तुमको मगर नही आती में' लिखा है। -

''उनसे किसी ने कहा कि वे पुलिस अधिकारी होकर भी सदा गुंडे बंदमाशों और अपराधियों में ही कयो घिरे रहते है। भले लोगो की संगत क्यों नही रकते। तो थाना प्रभारी बोले, उन शरिफों के साथ रहकर समय नष्ट करने का क्या लाभ, जो न कोई अपराध करते ळे न हमे पैसा खिलाते है। हमें तो वे अपराधी ही पसंद है, जो स्वयं भी खाते है और हमारी झोली भी भरते है।''

इक्कीसवी शती के इस आधुनिक समाज में आदमी समाज केंद्रित न बनकर व्यक्ति केंद्रित बनता जा रहा है। समाज में संप्रदाय और आचरण दिखाने के आचरण बन रहे है। इस वजह से आचरण अपने अर्थ को खो रहे है। समाज में नैतिकता मात्र नाम के लिए है। नैतिकता की दुहाई तो समाज के दुर्बल लोगों के लिए सीमित रह गई है और बेईमानदार लोग अपने मनमाने ढंग से इनको अपने आचरणों में उपयोग करते है। पैस के लालच में आदमी कछ भी करते शरमाते नही है। इस पर नरेन्द्र कोहली अपनी आलोचना 'श्रध्दांजली' में लिखते है-

''पर श्रध्दांजली सभा तो शोक सभा होती है। मैने कहा, और तुम अपने पोते की वर्षगाँठ मना रहे हो। तो क्या हो गया। वह बोला, सब मना रहे है। हम भी मना लेते है। दो मिनिट मौन ही तो रखना है। दो भी कौन रखता है। एक ही मिनिट में सब आँखे खोल देते है।''

अंग्रेजी का प्रभाव

Scanned by CamScanner

विदेशियों ने हमसे हमारी जुबान छीन ली है। अंग्रेज अपनी जुबान हमें उधार के रुप में दे ही है। इससे हम अपनी असलियत खोते जा रहे है। अंग्रेजी ओर अंग्रेजीयत की वजह से हम अपना खान-पान, अपना रहन-सहन, अपनी भाषा, अपनी सभ्यता और संस्कृति को उपेक्षा की नजर से देख रहे है। आजादी मिलने के इतने वर्षो बाद भी हमारी देशीय भाषाओं से तथा अपनी मातृभाषा से ज्यादा अंग्रेजी भाषा का महत्त्व है। अंग्रेजी भाषा ठीक तरह से न लिखते, न पढते, न बोलते फिर भी अंधे होकर इसी भाषा को स्मार्टनेस का प्रतीक मानते है। इसी पर नरेन्द्र कोहली ने 'स्मार्टनेस' का मूल्य नामक व्यंग्य रचना में लिखते है।

''अहा! कितना मैचिंग!' देश मेरे बच्चे के समान अपनी बोली में छत्तीसों गीत गाता है और सरकार मेरी पत्नी के समान कहती है, बेटे! यह नही। वह स्कूल वाला अंग्रेजी गाना थैंक यू गॉड! बच्चा गूँगा हो जाता है और चुपचाप हाथ जोडकर खडा हो जाता है। उसकी माँ फिर कहती है- गाओं बेटे! ''

आधुनिक युग के शिक्षित लोग अंग्रेजी को हमारी सामाजिक बराबरी के सिध्दांत का प्रतीक मानते है। ये लोग अंग्रेजी को हमारी भाग्य विधाता के रुप में स्वीकार करते है और उनकी दृष्टि में अंग्रेजी माध्यम के द्वारा प्राप्त शिक्षा सच्ची शिक्षा होती है। अंग्रेजी को अनिवार्य रुप से शिक्षा का माध्यम बनाकर हिन्दी भाषा को अस्वीकार कर रहे है। आज के शिक्षाविद और अधिकारी गण इस पर अपनी उपहासात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए नरेन्द्र कोहली ने 'एक और लाल तिकोन' में व्यंगय किया है।-

''विद्वान लोग तो कहते है कि अंग्रेजी उच्च शिक्षा का माध्यम है। अंग्रेजी हट गई तो उच्च शिक्षा नहीं रहेगी और आप उसे उच्च शिक्षा से रोकने का साधन बता रहे है? मैने पागलो का सा प्रश्न किया । वे मेरी मूर्खता पर खूब हँसे जी भर। बोले, मै भी अंग्रेजी को उच्च शिक्षा का माध्यम मानता हूँ। उच्च शिक्षा के माध्यम से अभिप्राय है- समाज में उँच-नीच बनाए रखने का माध्यम। अंग्रेजी हटी तो सब लोग बराबर हो जाएँगे। तब भारत में जनतंत्र हो जाएगा। उँच-नीच नहीं रह पाएगी।''

संदर्भ सूची

१. नरेन्द्र कोहली : त्रासदियाँ, पृ. सं. ९-१०
२. नरेन्द्र कोहली : एक और लाल तिकोन , पृ. सं. ५१-५२
३. नरेन्द्र कोहली : देश के शुभचिंतक, समग्र व्यंग्य-एक पृ. सं. ६७
४. नरेन्द्र कोहली : त्राहि-त्राहि, समग्र व्यंग्य दो, पृ. सं. ३५८
५. नरेन्द्र कोहली : त्राहि-त्राहि, समग्र व्यंग्य दो, पृ. सं. ४५९
६. नरेन्द्र कोहली : रामलुभाया कहता है, समग्र व्यंग्य चार, पृ. सं.६७
७. नरेन्द्र कोहली : एक और लाल तिकोन , पृ. सं. ३७

Scanned by CamScanner

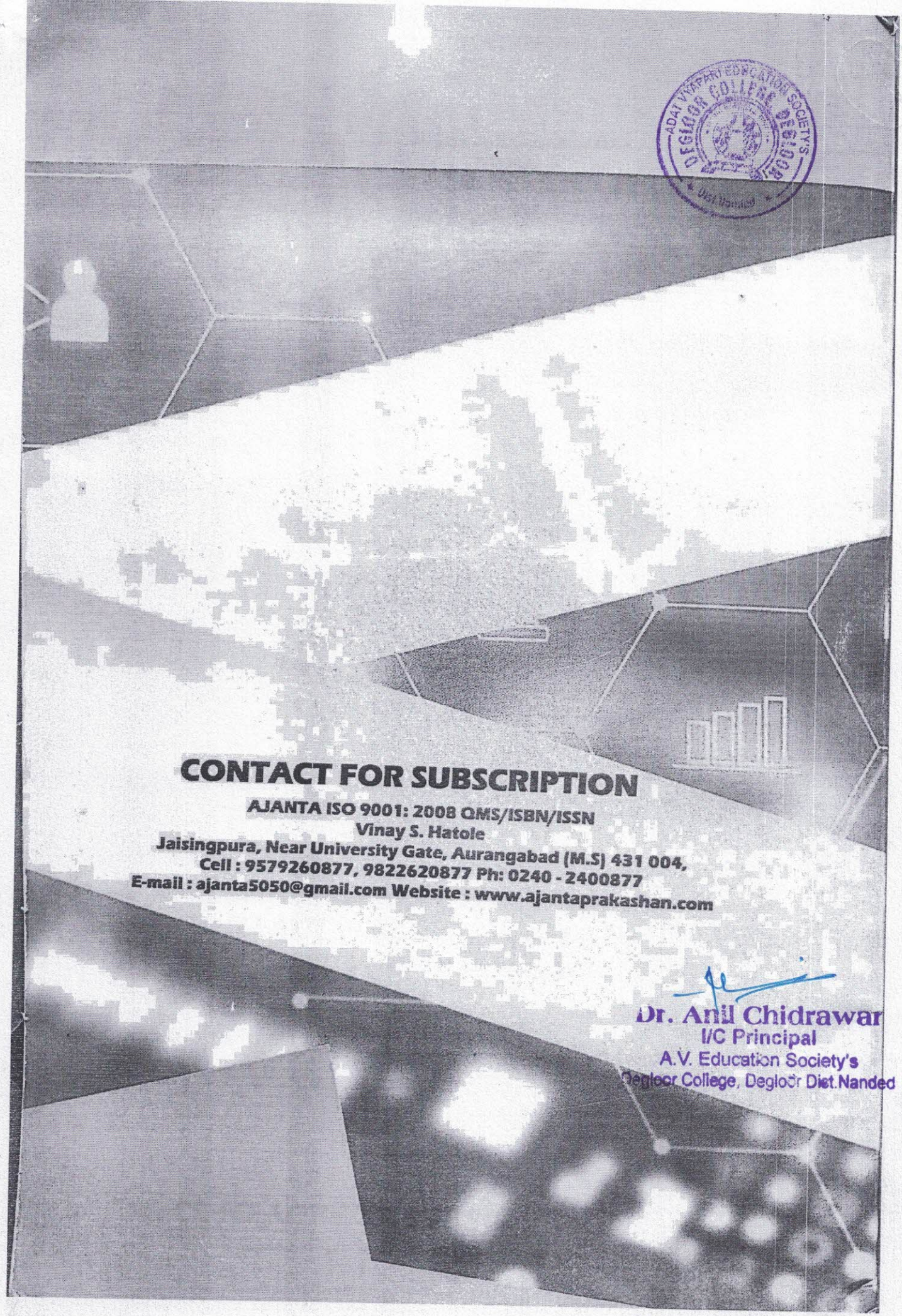

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S
DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR
Dist. Nanded

CONTACT FOR SUBSCRIPTION

AJANTA ISO 9001: 2008 QMS/ISBN/ISSN
Vinay S. Hatole
Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad (M.S) 431 004,
Cell : 9579260877, 9822620877 Ph: 0240 - 2400877
E-mail : ajanta5050@gmail.com Website : www.ajantaprakashan.com

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

Scanned by CamScanner